रचना शर्मा

ई—मेल-nabarachana@gmail.com

मौत का डर

“पिताजी! बस का टिकट कटवा दूँ ?”

“इस बरसात में मौत की तलाश में जाना नहीँ चाहता! हर जगह भूस्खलन हो रहा है ।”

“तो फिर मैं हवाईजहाज का टिकट कटवा दूँ?”

“नहीं, हवाईजहाज से तो और भी डर लगता है । मैं नहीं जाऊँगा । विमान दुर्घटनाओं में बहुत सारे लोग मारे गए ।”

“तो फिर कैसे जाएँगे? मित बा की चौरासी पूजा है, आप का वहाँ पहुँचना जरूरी है !”

“पहले, हम पैदल चलते थे । अभी तो हमें पैदल चलने से भी डर लगता है । कहीं पत्थर सिर पर न गिर पड़े । बसु! मैं अभी नहीँ जाऊँगा, बारिश खत्म होने के बाद उनसे मिलने जाऊँगा।”

यात्रा के लिए प्रतिकूल मौसम और असुरक्षित परिवहन को देखकर उसने पिता के यात्रा की तारीख आगे बढ़ा दी । नाश्ता करने के बाद वह आराम करने के लिए अपने कमरे में चला गया।

“पिताजी! चलो, पैर फैलाने के लिए शाम की सैर पर चलें !” पिताजी ने नहीँ सुना तो वह उनके कमरे में गया ।

वह बिस्तर पर पैर फैला चुके थे ।

हिन्दी अनुवाद : पुष्कर्राज भट्ट

चितवन, नेपाल में रहने वाली रचना शर्मा नेपाली लघुकथा की सुपरिचित लेखिका एवं अभिनेत्री हैं । वह रचनात्मक लेखन, फेसबुक पेज सलन, अभिनय के साथसाथ कुशल वाचक भी है । उनके लघुकथा नेपाल एवं भारत के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित है ।